19-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम गॉड फादरली स्टूडेन्ट हो, तुम्हें सच्चा-सच्चा रूप-बसन्त बन अपने मुख से सदैव ज्ञान रत्न ही निकालने हैं"

प्रश्नः-बाबा बच्चों को सुरजीत करने के लिए कौन सी संजीवनी बूटी देते हैं?

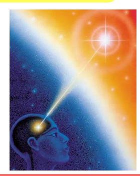

उत्तर: मनमनाभव अर्थात् बाप को याद करो। नशा रहे - "परमात्मा द्वारा हम देवता बनने के लिए अथवा राज्य पद पाने के लिए यह पढ़ाई पढ़ रहे हैं।" यह स्मृति ही संजीवनी बूटी है, जो सुरजीत कर देती है। उनकी अवस्था कभी मुरझा नहीं सकती। वे सदा अपनी जांच करते दूसरों को भी सावधान करते रहेंगे।

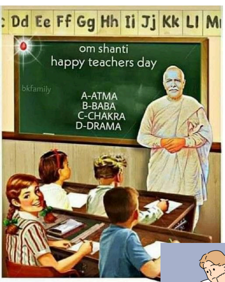

ओम् शान्ति। यह कॉलेज है ना। जैसे स्कूल में स्टूडेन्ट बैठते हैं तो समझते हैं हम टीचर के आगे बैठे हैं। कौन सा इम्तहान पास करने बैठे हैं, वह भी बुद्धि में है। सतसंग आदि में जहाँ वेद शास्त्र आदि सुनाते हैं, वहाँ कोई एम नहीं रहती। वह शास्त्र आदि तुम्हारी बुद्धि से निकल गये हैं। तुम जानते हो कि हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं, भविष्य 21 जन्मों के लिए। स्टूडेन्ट घर में बैठा होगा अथवा कहाँ भी जायेगा, बुद्धि में यह रहता है हम फलाना इम्तहान पास करेंगे। तुम बच्चे भी क्लास में बैठे हुए यह जानते हो कि हम देवता बन रहे हैं। तुम भी अपने को विद्यार्थी तो समझते हो ना। "हम रूह हैं, इस शरीर द्वारा हम पढ़ रहे हैं।" रूह जानती है कि यह शरीर छोड़ भविष्य में हम नया शरीर लेंगे, उनको देवता कहा जाता है। यह तो विकारी पतित शरीर है, हमको फिर नया शरीर मिलेगा। यह समझ अभी मिली है। मैं आत्मा पढ़ रहा हूँ, ज्ञान सागर पढ़ा रहे हैं। यहाँ तुमको गृहस्थ व्यवहार का ओना (चिंता) है नहीं। बुद्धि में यही रहता है कि हम भविष्य के लिए मनुष्य से देवता बन रहे हैं। देवतायें रहते हैं स्वर्ग में। यह घड़ी-घड़ी चिंतन करने से बच्चों को खुशी रहेगी और

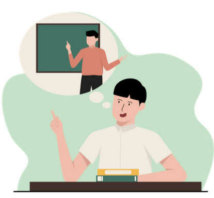

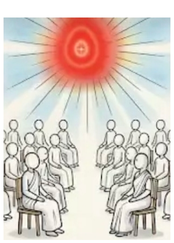

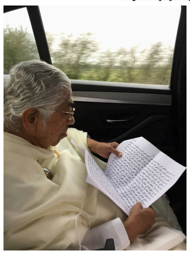

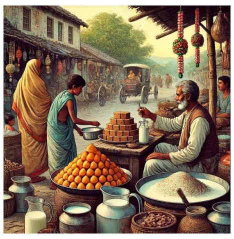

पुरुषार्थ भी करेंगे। मन्सा-वाचा-कर्मणा पवित्र भी रहेंगे। सबको खुशी का सन्देश सुनाते रहेंगे। ब्रह्माकुमार तो बहुत हैं ना। सब स्टूडेन्ट लाइफ में हैं। ऐसे नहीं कि धन्धे धोरी में जाने से वह लाइफ भूल जायेगी। जैसे यह मिठाई वाला है, समझेगा ना कि हम स्टूडेन्ट हैं। स्टूडेन्ट को कभी मिठाई बनानी होती है क्या? यहाँ तो तुम्हारी बात ही न्यारी है। शरीर निर्वाह के लिए धन्धा भी करना है। साथ-साथ बुद्धि में यह याद रहे कि हम परमपिता परमात्मा द्वारा पढ़ रहे हैं। तुम्हारी बुद्धि में रहता है कि इस समय सारी दुनिया नर्कवासी है। परन्तु यह कोई समझते नहीं हैं कि हम भारतवासी नर्कवासी हैं, हम भारतवासी ही स्वर्गवासी थे। तुम बच्चों को भी सारा दिन यह नशा रहता नहीं है। घड़ी-घड़ी भूल जाता है। भल तुम बी.के. हो, टीचर्स हो, शिक्षा देते हो, मनुष्य को देवता, नर्कवासी को स्वर्गवासी बना रहे हो, फिर भी भूल जाता है। तुम जानते हो इस समय सारी दुनिया आसुरी सम्प्रदाय है। आत्मा भी पतित तो शरीर भी पतित है। अब तुम बच्चों को इन विकारों से ग्लानी आती है। काम, क्रोध आदि सब ग्लानी की चीज़ें हैं। सबसे ग्लानी की चीज़ है विकार। संन्यासियों में भी

19-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा"

Subtle Point to understand

थोड़ा क्रोध रहता है क्योंकि जैसा अन्न वैसा मन, गृहस्थियों का ही खाते हैं। कोई अनाज नहीं खाते लेकिन पैसे तो लेते हैं ना। पतितों का उस पर प्रभाव तो रहता है ना। पतित का अन्न पतित ही बनायेगा। पवित्रता के ऊपर तुम विशेष ज़ोर देते हो। तुम्हारा यह प्रचार बढ़ता जायेगा। सब चाहेंगे हम पवित्र बनें, यह बात दिल से लग जायेगी क्योंकि पवित्र बनने के बिगर तो स्वर्ग का मालिक बन नहीं सकेंगे। धीरे-धीरे सबकी बुद्धि में आता जायेगा, जो स्वर्गवासी बनने होंगे वही बनेंगे। कहेंगे हम तो पवित्र बन पवित्र दुनिया के मालिक जरूर बनेंगे। यह कल्याणकारी संगमयुग है जबकि पतित दुनिया पावन होती है, इसलिए इसको पुरुषोत्तम युग कहा जाता है। यह कल्याणकारी है। मनुष्य सृष्टि का कल्याण होता है। बाप कल्याणकारी है तो बच्चों को भी बनायेंगे। आकर योग सिखाए मनुष्य से देवता बनाते हैं।

तुम जानते हो यह है हमारा हेड स्कूल। यहाँ कोई उल्टे धन्धे भी किसको नहीं है। बाहर जाने से

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

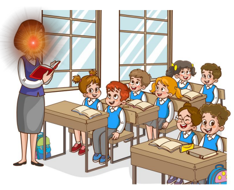

धन्धेधोरी में लग जाते हैं तो यह याद नहीं रहता कि हम स्टूडेन्ट हैं। "हम नर्कवासी से स्वर्गवासी बन रहे हैं।" यह ख्यालात बुद्धि में तब चलते जब फुर्सत हो, कोशिश कर टाइम निकालना चाहिए। बुद्धि में याद रहना चाहिए कि "हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन रहे हैं।" एक बाप को ही याद करना है। धन्धे में भी फ्री टाइम मिलता है। बुद्धि में यह याद कोशिश कर लानी चाहिए कि हम गॉड फादरली स्टूडेन्ट हैं। आजीविका के लिए यह धन्धा आदि करते हैं। वह है मायावी धन्धा, यह भी तुम्हारी आजीविका है, भविष्य के लिए सच्ची कमाई तो यह है, इसमें बड़ी अच्छी बुद्धि चाहिए। अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा को याद करना है। समझाना है, अब हम आत्माओं को जाना है घर। बाबा हमको लेने के लिए आये हैं। सारा दिन बुद्धि में विचार सागर मंथन चलना चाहिए। जैसे गाय खाना उगारती रहती है, ऐसे उगारना है। बच्चों को अविनाशी खजाना मिलता है। यह है आत्माओं के लिए भोजन। यह याद आना चाहिए हम परमपिता परमात्मा द्वारा पढ़ रहे हैं - देवता बनने के लिए, वा राज्य पद पाने के लिए, यह याद करना है। घड़ी-घड़ी

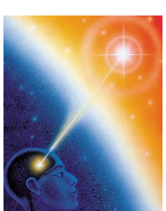

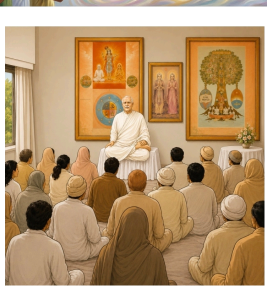

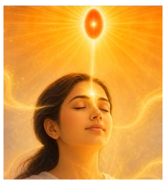

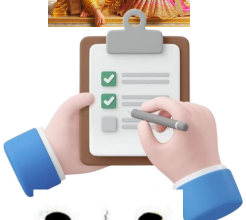

imp to understand

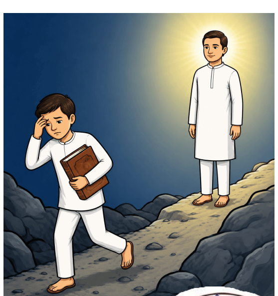

भूल जाते हैं फिर खुशी के बदले अवस्था मुरझाई रहती है। यह संजीवनी बूटी है जो अपने पास रखनी है और औरों को भी देनी है, सुरजीत करने के लिए। शास्त्रों में तो लम्बी चौड़ी कहानियां लिख दी हैं। बाबा इन सबका रहस्य बैठ बताते हैं। मनमनाभव अर्थात् बाप को याद करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बन जायेंगे। अपनी दिल से पूछते रहो, जांच करते रहो, एक-दो को सावधान करते रहो। कोई खिटपिट होती है तो बुद्धि उसमें लग जाने के कारण किसी का कहना मीठा नहीं लगता। माया तरफ बुद्धि लग जाने से फिर वही फिकरात रहेगी। तुम बच्चों को तो खुशी रहनी चाहिए। बाप को याद करो, परन्तु अपनी ही उलझन में होंगे तो वह दवाई लगेगी नहीं, घुटके खाते रहेंगे। ऐसा करना नहीं चाहिए। स्टूडेन्ट पढ़ाई को थोड़ेही छोड़ जाते हैं। तुम बच्चे जानते हो यह हमारी पढ़ाई है भविष्य के लिए, इसमें ही हमारा कल्याण है। धन्धा धोरी आदि करते हुए भी कोर्स लेना है। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। यह भी नॉलेज बुद्धि में रखनी है। याद है संजीवनी बूटी। एक-दो को याद दिलाना चाहिए। स्त्री-पुरुष एक-दो को याद कराते रहें। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा यह पढ़ा रहे हैं। शिवबाबा

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

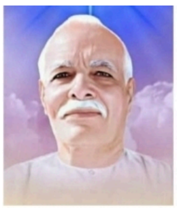

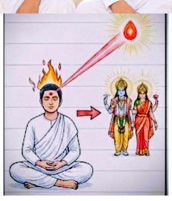

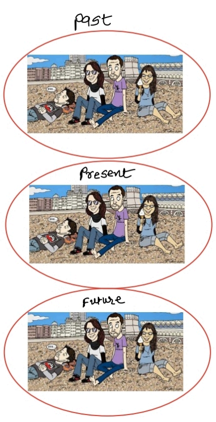

के रथ का श्रृंगार कर रहे हैं तो शिवबाबा की याद रहनी चाहिए। सारा दिन याद रहना तो मुश्किल है। वह अवस्था तो अन्त में ही होनी है। जब तक कर्मातीत अवस्था हो तब तक रुसतम से माया लड़ती रहेगी। गाया भी है एक-दो को सावधान कर उन्नति को पाओ। Example ऑफिसर लोग नौकर को भी कह देते हैं कि हमको यह बातें याद कराना। तुम भी एक-दो को याद कराओ। मंजिल बहुत ऊंची है। बाप कहते हैं - मुझे याद करने से पावन बन जायेंगे। Point to ponder deeply... यह बाप कोई नई बात नहीं सुनाते। तुमने लाखों करोड़ों बार यह ज्ञान सुना है, फिर यह सुनेंगे। ऐसे कोई भी सतसंग में कहने वाला नहीं होगा कि हमने कल्प-कल्प सुना है। अब सुन रहे हैं फिर सुनेंगे। कल्प-कल्प सुनते आये हैं, ऐसे कोई कह नहीं सकेगा। बाप समझाते हैं तुमने आधाकल्प भक्ति की है। अब फिर तुमको ज्ञान मिला है, जिससे सद्गति होती है। बाप को याद करने से पाप कट जायेगा। यह तो समझने की बात है ना। पुरुषार्थ करना है। जज वा बड़े आदमी का बच्चा कोई उल्टा काम करे तो नाम बदनाम हो जाए। यहाँ तुम भी बाप के बने हो तो ऐसा कोई कर्म नहीं करना है, नहीं तो बाप की निंदा

19-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

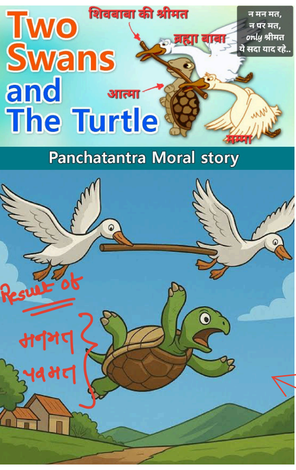

करायेंगे। सतगुरू के निंदक ठौर न पायें अर्थात् ऊंच पद पा न सकें। ईश्वर की सन्तान होकर आसुरी कर्म से डरना चाहिए। श्रीमत पर चलना होता है। अपनी मत पर चलने से धोखा खायेंगे, पद भ्रष्ट हो जायेगा। पूछ भी सकते हैं, आपकी मत पर ठीक चल रहे हैं।

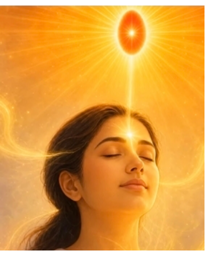

बाप की पहली-पहली मत है बाप को याद करो। कोई विकर्म नहीं करो। बाबा कौन से विकर्म करता हूँ, आपको कुछ मालूम हो तो बताओ। मालूम होगा तो बता देंगे। यह-यह तुमसे भूलें होती हैं, उनको विकर्म कहा जाता है। सबसे बड़ा विकर्म है काम विकार का, जास्ती झगड़ा उस पर चलता है।

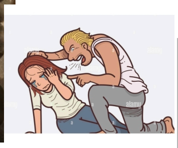

बच्चों को हिम्मत आनी चाहिए, विचार करना चाहिए। कुमारियों का झुण्ड होना चाहिए, जो कहे कि हमको शादी करनी ही नहीं है।

अब है कल्प का संगमयुग, जिसमें पुरुषोत्तम बनना है। इस लक्ष्मी-नारायण को पुरुषोत्तम कहा जाता है। विकारी को थोड़ेही पुरुषोत्तम कहेंगे। अब तुम पुरुषोत्तम बन रहे हो। सबको हक है बनने का। पुरुषोत्तम मास पर तुम कितनी सर्विस कर सकते हो। बड़ी धूमधाम मचानी चाहिए। यह पुरुषोत्तम युग ही उत्तम युग है, जबकि मनुष्य नर्कवासी से स्वर्गवासी बनते हैं। यह कॉमन

ints: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

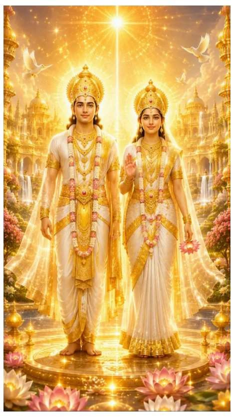

बात है। तुम बच्चों को अच्छी रीति समझाना है। पुरुषोत्तम होते हैं सतयुग में। कलियुग में कोई उत्तम पुरुष होते ही नहीं। यह है ही पतित दुनिया। वहाँ तो पवित्र ही पवित्र हैं। यह सब बातें बाप बच्चों को समझाते हैं, औरों को समझाने के लिए। मौका देख समझाना चाहिए। तुम यहाँ बैठे हो, समझते हो हमको निराकार बाबा परमपिता परमात्मा राजयोग सिखा रहे हैं, हम स्टूडेन्ट हैं। इस पढ़ाई से स्वर्ग के देवी-देवता बन रहे हैं। सब इम्तहान से बड़ा इम्तहान है, यह राजाई प्राप्त करने का इम्तहान, जो परमात्मा के सिवाए कोई पढ़ा न सके। बाबा खुद परोपकारी है, खुद स्वर्ग का मालिक नहीं बनता। स्वर्ग का प्रिन्स श्रीकृष्ण ही बनते हैं। निष्काम सेवा बाबा करते हैं। कहते हैं मैं राजा नहीं बनता हूँ। तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। यह बातें किसकी बुद्धि में नहीं हैं। ऐसे बहुत हैं, भल यहाँ साहूकार हैं, वहाँ गरीब बन जायेंगे और जो अभी गरीब हैं, वह बहुत साहूकार वहाँ बनते हैं। विश्व का मालिक बनना - यह बेहद की बात है ना। गाया भी हुआ है - मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। स्वर्ग का मालिक ही बनायेगा। तुम जानते हो हम स्वर्ग का मालिक बन रहे हैं तो कितना

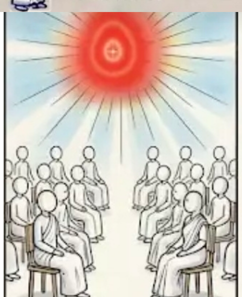

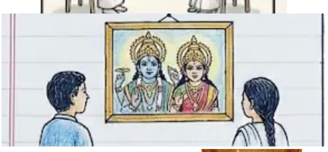

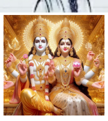

Exclusive Authority of Shiv baba

Niswarth Sevadhari मेरा बाबा

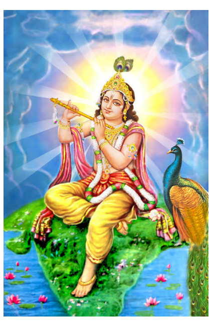

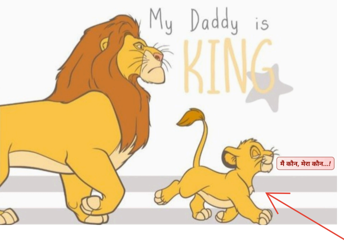

19-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

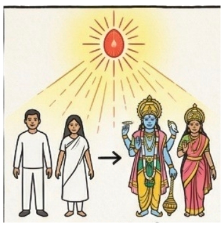

फखुर होना चाहिए। हमको पढ़ाने वाला परमपिता परमात्मा है। हम अब नर्कवासी से स्वर्गवासी देवता बनते हैं, यह भी याद रहने से खुशी का पारा चढ़ा रहेगा। स्टूडेन्ट लाइफ इज़ दी बेस्ट। पुरुषार्थ करके बनना तो राजा रानी चाहिए ना। ऐसे नहीं बताना चाहिए कि हम राजा बनकर फिर रंक बनेंगे। यह नहीं बताना होता है। पूछना है क्या बनना चाहते हो? सब कहेंगे हम विश्व का मालिक बनेंगे। सो तो भगवान बाप ही बना सकते हैं। कहते हैं मामेकम् याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे, कितनी सहज बात है। कोई भी बन सकता है। भल कितना भी गरीब हो, इसमें पैसे की बात नहीं इसलिए बाप को कहते हैं - गरीब निवाज़।

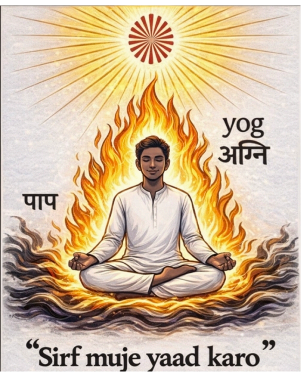

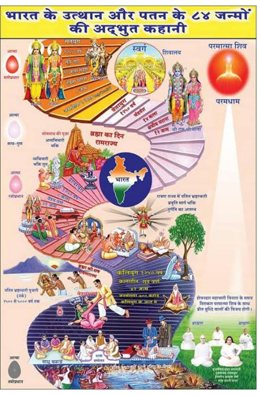

बाप को याद करके पापों का घड़ा खाली करना है, जितना जो मेहनत करेंगे सो पायेंगे। सीढ़ी से देखते हो कितना ऊंच चढ़ते हैं। चढ़े तो चाखे राजाई रस, गिरे तो चकनाचूर। विकार में गिरा, फारकती दी तो बाबा कहते हैं एकदम नीचे गिर पड़ते हैं। सपूत बच्चे

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

19-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

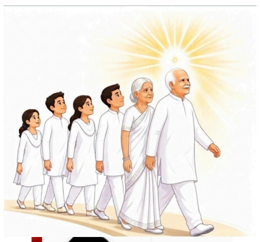

तो पुरुषार्थ कर अपना हीरे जैसा जन्म बनायेंगे। बच्चों को पुरुषार्थ बहुत करना है। अब जो करेगा... सबको कहते हैं मात-पिता को फॉलो करो, आप समान बनाओ। जितना-जितना रहमदिल बनेंगे उतना तुमको ही फायदा है। टाइम वेस्ट नहीं करना है, औरों को युक्ति बताते रहना है। नहीं तो इतना ऊंच पद पा नहीं सकते। पिछाड़ी में तुमको बहुत साक्षात्कार होंगे फिर उस समय तुम कुछ कर नहीं सकेंगे। इम्तहान में नापास हुआ सो हुआ। ऐसे न हो जो पिछाड़ी में पछताना पड़े। फिर तो पुरुषार्थ कर नहीं सकेंगे इसलिए जितना अपना और दूसरों का कल्याण करना है, उतना करो। अन्धों की लाठी बनो। कल्प-कल्पान्तर स्वर्ग की स्थापना की है, जरूर करेंगे। ड्रामा में नूँध है, अब जो करेगा सो पायेगा। बाबा के लाल छिपे नहीं रह सकते। रूप-बसन्त मिसल मुख से रत्न ही निकलें। धूती नहीं बनना है, दूसरे का नुकसान नहीं करना है। तुमको कोई उल्टा-सुल्टा सुनाये तो समझो धूती है, उनसे सम्भाल रखनी है। अपना बेहद का वर्सा बाप से लेने में पूरा तत्पर रहो। अच्छा।

May I have your Attention Please..!

Now or Never..

Simple Math..

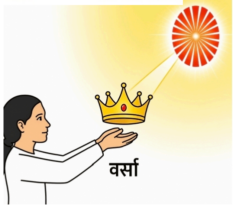

19-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) अपना और दूसरों का कल्याण करना है। अंधों की लाठी बनना है। कभी कोई उल्टी बातें सुनायें तो उनसे सावधान रहना है।

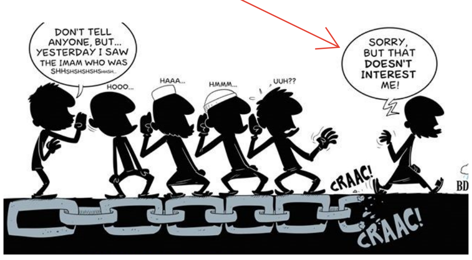

2) मन्सा-वाचा-कर्मणा पवित्र बनना है। हम स्टूडेन्ट हैं, "भगवान हमें देवता बनने की पढ़ाई पढ़ा रहे हैं," इसी खुशी में रहना है।

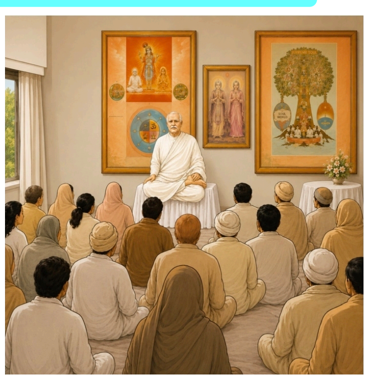

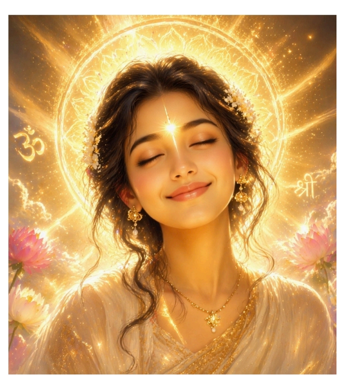

Points: धारणा सेवा M.imp.

Method/Process/Instrument

19-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- साथी और साक्षीपन की स्मृति द्वारा सब बन्धनों से मुक्त होने वाले सर्व शक्ति सम्पन्न भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

most imp Homework

स्लोगन:- फरिश्ता बनना है तो साक्षी हो हर आत्मा का पार्ट देखो और सकाश दो।

10/10/23

सर्व शक्तियों से सम्पन्न बन अधीनता से परे होने के लिए दो शब्द सदा याद रहें -

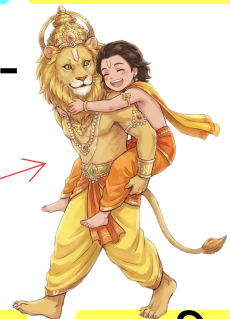

एक साक्षी दूसरा-साथी।

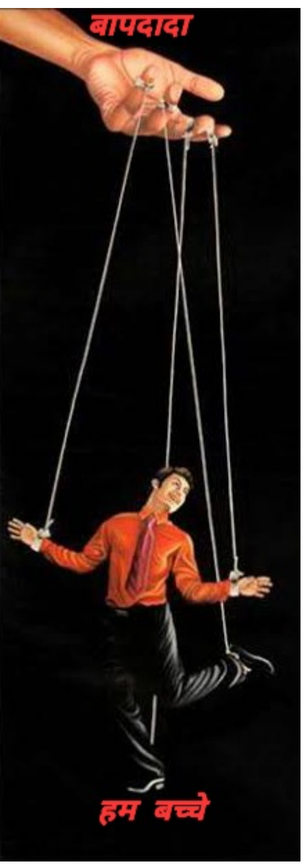

इससे बन्धनमुक्त अवस्था जल्दी बन जायेगी। सर्वशक्तिवान बाप का साथ है तो सर्व शक्तियां स्वत: (automatically) प्राप्त हो जाती हैं और साक्षी बनकर चलने से कोई भी बन्धन में फंसेंगे नहीं।

निमित्त मात्र इस शरीर में रहकर कर्तव्य किया और साक्षी हो गये - इसका विशेष अभ्यास बढ़ाओ।

स्लोगन:-अशुद्ध और शुद्ध दोनों की युद्ध है तो ब्राह्मण के बजाए क्षत्रिय हो।

For Self Analysis

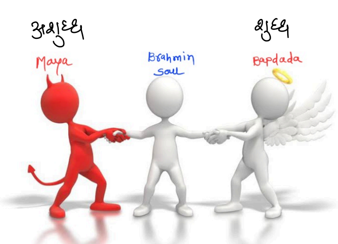

Po

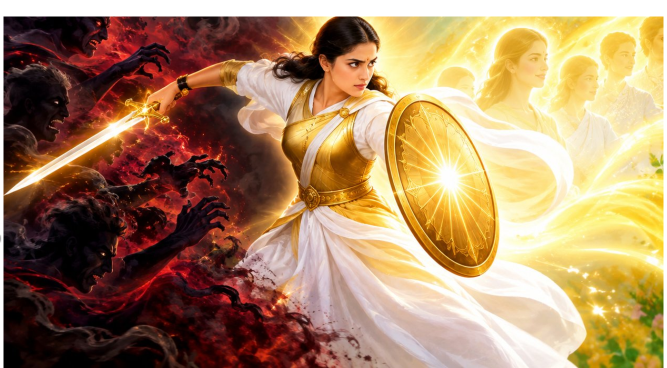

सेवा M.imp.

19-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ये अव्यक्त इशारे -

Call of time/समय की पुकार

अब अपने दाता स्वरूप को प्रत्यक्ष करो

तड़फती हुई या भिखारी प्यासी आत्माओं की प्यास मिटाने के लिए अपने को अतीन्द्रिय सुख वा सर्व शक्तियों से भरपूर करो।

जितना सर्व शक्तियों का खज़ाना, अतीन्द्रिय सुख का ख़ज़ाना इकट्ठा होगा तो अपनी स्थिति कायम रहेगी और अन्य आत्माओं को भी सम्पन्न बना सकेंगे।

आप सर्व की झोली भरने वाले दाता के बच्चे हो, सबको देना है।

यह देने का दृश्य बहुत जल्दी सामने आयेगा।

Point M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Aug 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Aug 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.1 अमृतवेले का समय कब है?

(अ) अमृतवेले का समय बहुत-बहुत अच्छा है, इसलिए बाबा कहते सवेरे-सवेरे उठकर एकान्त में बैठ बाबा से मीठी-मीठी बातें करो। याद करो। क्योंकि वह समय बहुत सुन्दर है याद करने का, जिसको प्रभात कहा जाता है। भक्तिमार्ग में भी कहते हैं राम सिमर प्रभात मोरे मन। बाप भी कहते सवेरे उठ बाप को याद करो तो बड़ा मजा आयेगा। अमृतवेले का वायुमण्डल बड़ा शुद्ध होता है। दिन में गोरख धन्धा रहता है। रात को 12 बजे तक विकारी वायुमण्डल रहता है। साधु, सन्त, भक्त आदि सब भक्ति भी प्रभात को करते हैं। यूँ तो याद दिन में भी कर सकते हैं, लेकिन अमृतवेले ही बाप को याद करना अच्छा है। प्रभात का समय बहुत अच्छा है। उस समय माया के तूफ़ान नहीं आयेंगे। **रात को 12 बजे तक वायुमण्डल खराब रहता है। तो एक बजे तक छोड़ देना चाहिए। एक बजे के बाद वायुमण्डल अच्छा रहता है।**

Attention..!
Direction of The Almighty

(आ) अमृतवेला सबसे शुभ मुहूर्त माना जाता है। वो लोग कृष्ण का जन्म 12 बजे मनाते हैं, परन्तु वह प्रभात तो हुई नहीं। **प्रभात सवेरे 2-3 बजे को कहा जाता है। अमृतवेला 12 बजे को नहीं कहा जाता।** ऐसे थोड़े ही 12 बजे विकार से उठ कर कोई भगवान का नाम भी लेते होंगे? बिल्कुल नहीं। उस समय तो मनुष्य पतित, गन्दे होते हैं। वायुमण्डल खराब होता है।